जॉन एलिया

उर्दू की शायरी की एक अद्भुत किस्म ।

जॉन एलिया उर्दू के एक महान शायर हैं। इनका जन्म 14 दिसंबर 1931 को अमरोहा में हुआ। यह अब के शायरों में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले शायरों में शुमार हैं। शायद, यानी,गुमान इनके प्रमुख संग्रह हैं इनकी मृत्यु 8 नवंबर 2002 में हुई।[1] जौन सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं हिंदुस्तान व पूरे विश्व में अदब के साथ पढ़े और जाने जाते हैं।

जीवनी

जॉन एलिया का जन्म 14 दिसंबर 1931 को उत्तर प्रदेश के अमरोहा में एक प्रमुख परिवार में हुआ था। वह अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। उनके पिता अल्लामा शफ़ीक़ हसन एलियाह एक खगोलशास्त्री और कवि होने के अलावा कला और साहित्य से भी गहरे जुड़े थे। इस सीखने के माहौल ने उसी तर्ज पर जॉन की प्रकृति को आकार दिया। उन्होंने अपनी पहली उर्दू कविता महज 8 साल की उम्र में लिखी थी।[2]

वैवाहिक जीवन

जॉन एक साहित्यिक पत्रिका, इंशा के संपादक बने, जहाँ उनकी मुलाकात एक और विपुल उर्दू लेखक ज़ाहिद हिना से हुई, जिनसे उन्होंने बाद में शादी की। ज़ादा हिना अपनी शैली में एक प्रगतिशील बौद्धिक हैं और अभी भी दो पत्रिकाओं, जंग और एक्सप्रेस में वर्तमान और सामाजिक विषयों पर लिखती हैं। जॉन की शादी के बाद उनकी 2 बेटी और 1 बेटा का जन्म हुआ , पर 1980 के दशक के मध्य में उनका तलाक हो गया । उसके बाद, अलगाव के कारण जॉन की स्थिति खराब हो गई। वे क्रोधित हो गए और शराब पीने लगे।[3]

पाकिस्तान में आगमन

जॉन एलिया कम्युनिस्ट अपने विचारों के कारण [भारत] के विभाजन के सख्त खिलाफ थे, लेकिन बाद में इसे एक समझौता के रूप में स्वीकार किया। 1957 में एलिया पाकिस्तान चले गये और कराची को अपना घर बना लिया। जल्द ही वे शहर के साहित्यिक हलकों में लोकप्रिय हो गए। उनकी कविता उनकी विविध अध्ययन आदतों का स्पष्ट प्रमाण थी, जिसके कारण उन्हें व्यापक प्रशंसा और दृढ़ता मिली। इमेज | 150 पीएक्स | लेफ्ट | जॉन एलिजा की पुस्तक की छवि शिष्टाचार "शायद"

जॉन एक विपुल लेखक थे, लेकिन कभी भी उनके लिखित काम को प्रकाशित करने के लिए राजी नहीं किया गया था। उनका पहला कविता संग्रह "हो सकता है" तब प्रकाशित हुआ था जब वह 60 वर्ष के थे। जॉन एलिया द्वारा लिखित "न्यू चिल्ड्रन" नामक इस पुस्तक के अग्रदूत में, उन्होंने उन स्थितियों और संस्कृति पर गहराई से शोध किया है जिसमें उन्हें अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला था। उनकी कविता का दूसरा खंड, अर्थात् उनकी मृत्यु के बाद [2003] में प्रकाशित हुआ, और तीसरा खंड "गुमान" (2004) नाम से प्रकाशित हुआ। जॉन एलिया धार्मिक समुदाय में कुल एलियंस थे, [एक दकियानूसी] और [एक [नीरज | फ़ुजावी]]। उनके बड़े भाई, रईस अमरोहावी को धार्मिक चरमपंथियों ने मार डाला, जिसके बाद उन्होंने सार्वजनिक सभाओं में बोलते हुए बड़ी सावधानी बरतनी शुरू कर दी। जॉन एलियाह ट्रांसमिशन, एडिटिंग भी इस तरह के अन्य कामों में व्यस्त थे। लेकिन उनके अनुवाद

और ग्रंथ आसानी से उपलब्ध नहीं हैं।दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, इस्लामिक इतिहास, इस्लामिक सूफी परंपराएँ, इस्लामी विज्ञान, पश्चिमी साहित्य और संयोगवश, कर्बला] जॉन का ज्ञान किसी भी तरह व्यापक था। [स्कोप | एनसाइक्लोपीडिया] इस ज्ञान का सार यह था कि उन्होंने इसे अपनी कविता में भी शामिल किया ताकि वे अपने समकालीनों से अलग पहचान बना सकें।

कविता

मर चुका है दिल, मगर जिंदा हूं मैं.

जहर जैसी कुछ दवाई चाहिए,,

आप पूछते हैं आप अच्छे तो हैं, जी मैं अच्छा हूँ,

बस दुवाए चाहिए

बे-क़रारी सी बे-क़रारी है

वस्ल है और फ़िराक़ तारी है

जो गुज़ारी न जा सकी हम से

हम ने वो ज़िंदगी गुज़ारी है

निघरे क्या हुए कि लोगों पर

अपना साया भी अब तो भारी है

बिन तुम्हारे कभी नहीं आई

क्या मिरी नींद भी तुम्हारी है

आप में कैसे आऊँ मैं तुझ बिन

साँस जो चल रही है आरी है

उस से कहियो कि दिल की गलियों में

रात दिन तेरी इंतिज़ारी है

हिज्र हो या विसाल हो कुछ हो

जॉन एलिया

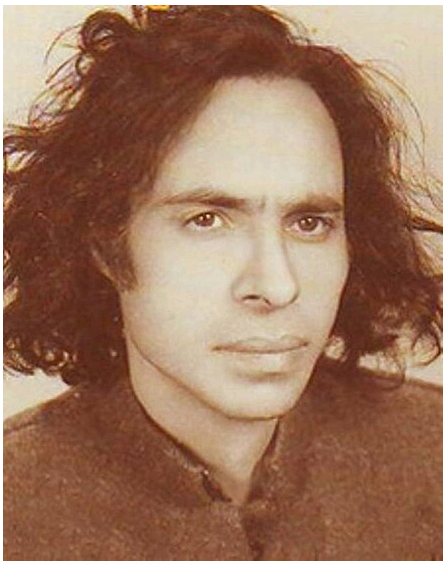

स्थानीय नाम	جون ایلیا
जन्म	14 दिसम्बर 1931 अमरोहा, उत्तर प्रदेश, ब्रिटिश भारत
मौत	8 नवम्बर 2002 (उम्र 70 वर्ष) कराची, सिंध, पाकिस्तान
पेशा	उर्दू कवि, विद्वान दार्शनिक
राष्ट्रीयता	पाकिस्तानी
शिक्षा	दार्शनिक, जीवनी लेखक, और विद्वान
विधा	ग़ज़ल कविता
उल्लेखनीय कामs	*शायद, यानी, लेकिन, गुमान, गोया, फरनोद*
बच्चे	ज़ैरौन एलिया, फेनाना फरनाम, सोहिना एलिया

हम हैं और उस की यादगारी है

इक महक सम्त-ए-दिल से आई थी

मैं ये समझा तिरी सवारी है

हादसों का हिसाब है अपना

वर्ना हर आन सब की बारी है

ख़ुश रहे तू कि ज़िंदगी अपनी

उम्र भर की उमीद-वारी है

मृत्यु

जॉन एलिया का लंबी बीमारी के बाद 8 नवंबर, 2002 को कराची में निधन हो गया।

सन्दर्भ

1. "संग्रहीत प्रति" (https://web.archive.org/web/20190401054429/http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%9C%E0%A5%89%E0%A4%A8_%E0%A4%8F%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE) . मूल (http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%9C%E0%A5%89%E0%A4%A8_%E0%A4%8F%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE) से 1 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 जून 2020.
2. "संग्रहीत प्रति" (https://web.archive.org/web/20191018094954/https://www.rekhta.org/Poets/jaun-eliya/profile?lang=ur) . मूल (https://www.rekhta.org/poets/jaun-eliya/profile?lang=ur) से 18 अक्तूबर 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अक्तूबर 2019.
3. "संग्रहीत प्रति" (https://web.archive.org/web/20191018093831/https://www.pakpedia.pk/jaun-elia) . मूल (https://www.pakpedia.pk/jaun-elia) से 18 अक्तूबर 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अक्तूबर 2019.